खुला आकाश

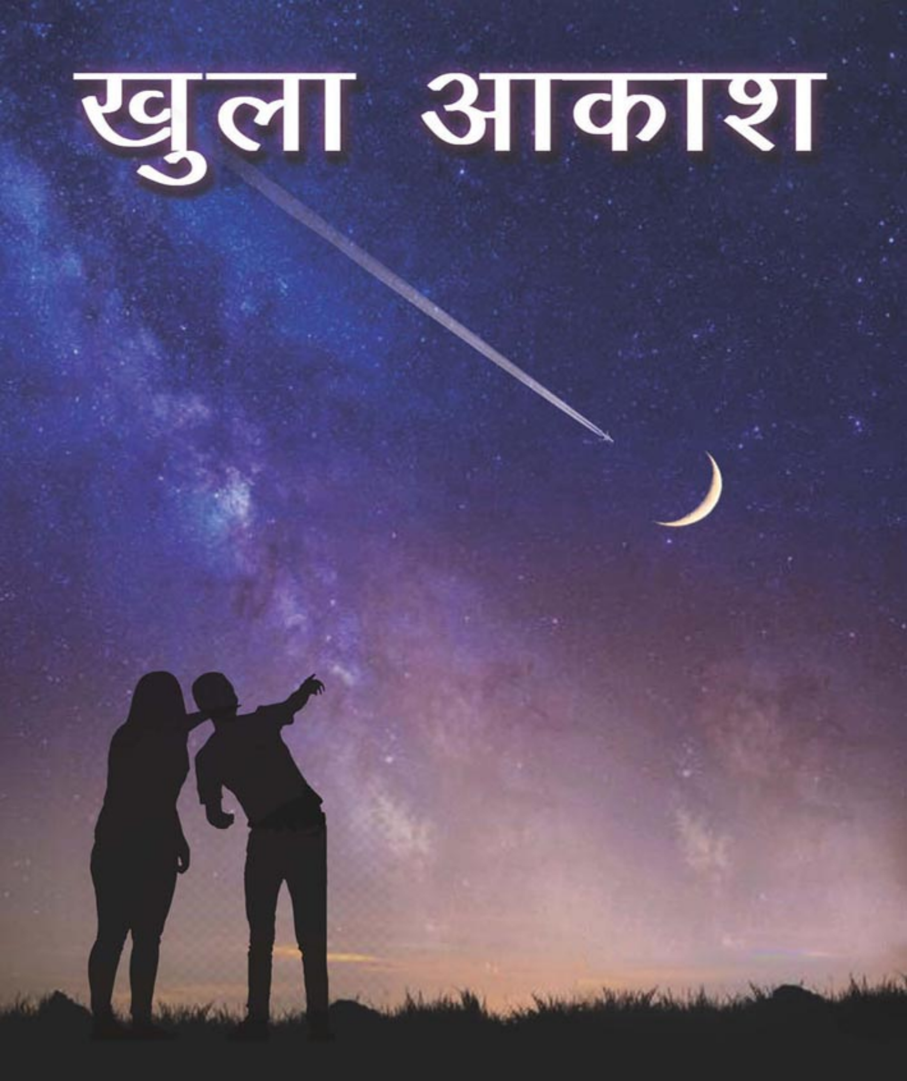

डॉ. राम बरन यादव

Copyright © 2021, Dr. Ram Baran Yadav

All rights reserved.

No part of this publication may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or any information storage and retrieval system now known or to be invented, without permission in writing from the publisher, except by a reviewer who wishes to quote brief passages in connection with a review written for inclusion in a magazine, newspaper or broadcast.

Published in India by Prowess Publishing,
YRK Towers, Thadikara Swamy Koil St, Alandur,
Chennai, Tamil Nadu 600016

ISBN: 978-1-5457-5395-8
eISBN: 978-1-5457-5396-5

Library of Congress Cataloging in Publication

विषय सूची

क्र.	विषय	पृष्ठ संख्या
1.	खुला आकाश	: 1
2.	खुला रंगमंच	: 7
3.	दीवानगी	: 17
4.	वो फागुनी शाम	: 25
5.	सुगम न संगीत सबन को	: 35
6.	खिलाड़ी और शिक्षा	: 43
7.	भाग्य और पुरूषार्थ	: 47
8.	कोरोना का कहर	: 55
9.	दर्द	: 83
10.	आभाषी दुनिया के रिश्ते	: 91
11.	पुराना फ्रेम	: 99
12.	ग्राहकों की तलाश में (लघु नाटिका)	: 103

खुला आकाश

कर्नल सतीश चन्द्र फौज की 32 साल की नौकरी से रिटायर्ड होकर वापस अपने गॉव आ गये। गॉव में अपनी पैतृक जमीन पर खेती और बागवानी करने लगे। रिटायरमेंट के समय जो पैसा मिला उससे कुछ जमीन और खरीद ली। खेती और बागवानी से पर्याप्त कमाई हो जाती थी। पेंशन की रकम पूरी की पूरी बच जाती। परिवार में पत्नी, एक बेटा, बहू और एक बेटी थी। आर्थिकरूप से सम्पन्न, खुशहाल परिवार में किसी चीज की कोई कमी नहीं थी।

कर्नल सतीश को केवल एक चिन्ता सताती रहती थी, वो था बेटी सीमा के लिये योग्य वर की तलाश करके उसका विवाह करना। एम.ए. करने के बाद बेटी ने बी.एड. कर लिया था और लेक्चरर के जॉब के लिए परीक्षाऐं दे रही थी किन्तु अभी तक सफलता नहीं मिली थी। कर्नल बेटी के लिए सरकारी नौकरीवाला वर तलाश रहे थे। कई लड़के देखे किन्तु कोई भी उनकी बेटी के काबिल नहीं मिला। कुछ लड़के पसन्द आये, किन्तु उन्होंने कारण, बहाने करके शादी से इन्कार कर दिया।

लड़कों और उनके परिवारवालों के शादी न करने के तरह–तरह के बहाने, कुछ कुण्डली न मिलने का बहाना करते, कुछ कहते लड़की की कुण्डली में मंगल दोष है, शनि भारी है, राहु–केतु की छाया है आदि–आदि। कर्नल सतीश ने बेटी सीमा की कुण्डली पंडित जी को दिखायी, पंडित जी भी कहने लगे बेटी की कुण्डली में चतुर्थ भाव में उच्च का मंगल है जिससे इसके पति पर संकट की सम्भावना रहेगी। कर्नल सतीश ने इस मंगल दोष के निवारण का उपाय पूँछा तो पंडित जी कहने लगे, उपाय तो है – उसके लिए बेटी सीमा का विवाह किसी पशु पक्षी या वृक्ष से करना होगा जिससे वह पशु, पक्षी या वृक्ष बेटी सीमा का पहला पति होगा और जो भी संकट आयेगा उसका प्रभाव उस पशु, पक्षी या वृक्ष पर पड़ेगा।

कर्नल सतीश ने पंडित जी से पूँछा कि क्या इसके बाद बेटी की कुण्डली से मंगल दोष हट जायेगा? पंडित जी ने कहा कुण्डली के योग तो स्थिर रहते हैं किन्तु उससे प्रभावित होने वाले कारक बदल जाते हैं। जैसे कि उपरोक्त कर्मकाण्ड करने के बाद

सीमा का पहला पति पशु, पक्षी या वृक्ष होने के कारण उसका विवाह मनुष्य से होने पर वह उसका दूसरा पति कहा जायेगा, उसके दूसरे पति पर मंगल दोष का प्रभाव नहीं पड़ेगा। पंडित जी की बातो को कर्नल सतीश सुनते रहे किन्तु कोई प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं की और पंडित जी को उनकी दक्षिणा देकर बिदा किया।

ग्रीष्म–ऋतु, रात्रि का प्रथम प्रहर कर्नल सतीश छत पर चारपाई पर लेटे हुए निरभ्र–शुभ्र आकाश में टिमटिमाते हुए तारों को देख रहे थे। विस्तृत खुला आकाश असंख्ये तारों की टिमटिमाहट से आलोकित हो रहा था। कर्नल सतीश ने पूर्वी क्षितिज से तारों की गणना शुरू की, आकाश के एक कोने के ही तारों की गणना करते–करते ही वे थक गये और तारों की गणना करना छोंड़ आकाश गंगा के दूधिया पथ को मंत्र–मुग्ध सा होकर देखने लगे। उत्तर दिशा में चमकते सप्त–ऋषि मंडल और ध्रुव तारे पर उनकी दृष्टि गयी। सेना में ट्रेनिंग के दौरान मैप रीडिंग और रात में दिशा जानने के लिए तारों की जानकारी दी गयी थी, खास तौर पर सप्त–ऋषि मंडल और ध्रुव तारे के बारे में। ध्रुव तारा हमेश उत्तर दिशा में ही दिखायी देता है। आचार्य वाराह मिहिर ने लिखा है कि उत्तर दिशा एक सौभाग्यवती हॅसती हुई युवती है। वह एकावली आभूषण और श्वेत–कमल की माला पहने हुए, ध्रुव तथा सप्तर्षियों को देखकर नाच रही है। कर्नल सतीश सोंचने लगे सारा आकाश असंख्य तारों से भरा हुआ है और सबकी रश्मियॉ धरती के सभी चराचर पर पड़ रही हैं तो भारतीय ज्योतिष में केवल नवग्रह, बारह राशियों और सत्ताईस नक्षत्रों के प्रभाव को ही मान्यता क्यों दी गयी है?

हिन्दू धर्म में ध्रुव तारे को बहुत महत्व दिया गया है किन्तु ज्योतिषी भाग्य–फल बताते समय ध्रुव तारे की गणना कभी नहीं करते। वे केवल सोलर सिस्टम के सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरू, शुक्र, शनि और छायाग्रह राहु–केतु का ही अध्ययन करते हैं। पृथ्वी की दैनिक गति (अपनी धुरी पर एक चक्कर) से दिन और रात होते हैं तथा वार्षिक गति (सूर्य का एक चक्कर) से महीने और ऋतुऐं। इन्हीं गतियों के दौरान पृथ्वी की सीध में जिस स्थान पर जो ग्रह दिखायी देते हैं उन्हें उस भाव पर प्रभावी बता कर ज्योतिषीगण मांगलिक आदि दोष निर्धारण कर देते हैं। जिसे अगर विज्ञान की कसौटी पर रखें तो खरा नहीं उतरता।

तारों को देखते–देखते कर्नल सतीश को अपने दोस्त संजय की याद आयी जो कि ज्योतिष विषय में काफी रूचि रखते थे। कर्नल सतीश नें सोंचा क्यों न संजय से ज्योतिषीय भ्रम और संशय के बारे में बात की जाये। कर्नल सतीश ने छत पर लेटे–लेटे ही संजय को मोबाइल पर काल किया। औपचारिक हाय–हैलो के बाद मूल विषय ज्योतिष पर आ गये। कर्नल सतीश ने कहा, यार बेटी की शादी में बड़ी अड़चने आ रही हैं। पंडित कहते हैं कि बेटी की कुण्डली में चर्तुथ भाव में उच्च का मंगल होने के कारण मंगल दोष है। इस कारण बेटी के विवाह के कई अच्छे रिश्ते आये और टूट गये।

संजय ने कर्नल सतीश से कहा, यार ये अधकचरे ज्योतिषियों और पोंगा पंडितों ने हमारे धर्म शास्त्रों में उल्लेखित तथ्यों का अपनी बुद्धि और मति के अनुसार सत्य से हटकर, अलग ही अर्थ निकाल लिया जिससे समाज और संस्कृति की बहुत क्षति हुई है। अब बेटी सीमा की कुण्डली का ही देखों चर्तुथ भाव में उच्च का मंगल पंचमहापुरूष योगों में से एक रूचक योग बनाता है। यहाँ सप्तम भाव का स्वामी मंगल उच्च का होकर अपने सप्तम भाव पर चर्तुथ दृष्टि डालता है जो कि उसके और जीवन साथी के लिए शुभत्व का कारक है। मंगल के कारण बेटी सीमा का जीवन साथी बलवान और पौरूषवान होगा। इसलिए अब कोई यदि बेटी की कुण्डली के मंगल दोष के बारे में बात करे तो उसकी मुझसे बात करवाना मैं उनको कुण्डली का सही विश्लेषण करके बता दूँगा।

संजय ने कर्नल सतीश को बताया कि आज हमारे भारतीय समाज में मंगल को लेकर अनेक भ्रान्तियाँ हैं। हिन्दू समाज में 'मंगली योग' आज सबसे अधिक प्रचलित है। ज्योतिष का ज्ञान न होने के बावजूद जब कभी मंगल के बारे में बात चलती है तो हर दूसरा आदमी अपने ज्ञान का बखान करने लगता है। वैदिक ज्योतिष शास्त्र में कहीं भी मंगली योग की चर्चा नहीं की गयी है फिर भी आज हिन्दू समाज में मंगलीयोग से लोग अकारण ही भयभीत हैं। वर–वधू के माता पिता को जब जानकारी लगती है कि लड़का या लड़की मांगलिक है तो वे सर्वगुण सम्पन्न होने के बावजूद आगे रिश्ते की चर्चा ही बन्द कर देते हैं। सुखद वैवाहिक जीवन के लिए विचार, व्यवहार, वाणी, परिवार, आर्थिक स्थिति आदि बहुत महत्वपूर्ण तथ्य हैं जिन्हें देखना आवश्यक है, ना कि केवल लड़का या लड़की मंगली है कि नहीं।

कर्नल आप अपनी सोंच और पसन्द के दायरे को खोलिये, संकीर्णता से बाहर आइये। आप अपनी बेटी के लिए सरकारी नौकरी वाला लड़का ढूँढ़ रहे हैं। जबकि आज का दौर इन्टरप्रेन्योरशिप का है अर्थात स्वयं का स्टार्टअप करने का। परम्परागत सरकारी नौकरियों से युवावर्ग मुँह मोड़ रहा है और खुद का अपना व्यापार, उद्धम शुरू कर रहे हैं। खुद के प्रोफेशन में सरकारी नौकरी से कहीं अधिक आगे बढ़ने के अवसर और स्वतन्त्रता रहती है। आज तरक्की के लिए युवा खुले आकाश में उड़ना पसन्द करते हैं न कि बँधी–बँधायी नौकरी के दायरे में जीना। इसलिए सरकारी नौकरी वाले लड़के के चक्कर में अपनी बेटी के लिए योग्य लड़कों को नजरअन्दाज न करो।

कर्नल सतीश ने संजय से कहा, यार तुम्हारी नजर में कोई लड़का हो तो बताओ। संजय ने कहा, हाँ है तो।

कर्नल सतीश – कौन, कहाँ रहता है, क्या करता है?

संजय – अपने पड़ोस में ही रहता है, लड़के ने बी.कॉम. करने के बाद हार्डवेयर की दुकान खोली है।

कर्नल सतीश ने हार्डवेयर की दुकान का नाम सुनकर थोड़ा अनमने से बोले दुकान में क्या कमाई कर लेता होगा। लड़के की लाइफस्टाइल भी हम्मालों जैसी होगी।

संजय – कमाई के मामले में 30 लाख के पैकेज से ज्यादा है और लाइफ स्टाइल देखना हो तो आपको उसके घर आना होगा।

कर्नल सतीश – ठीक है आप लड़के वालो से बात कर लीजिए मैं इस रविवार को शाम को आता हूँ।

संजय – ठीक है, मिलते हैं रविवार को।

रविवार को कर्नल सतीश, संजय और अपनी बेटी के साथ लड़के वालों के घर की ओर कार से चल दिये। उनकी कार एक बड़े आलीशान बॅगले के सामने रूकी। वाचमैन ने परिचय पूँछा और कार को बंगले के अन्दर लिया। पन्द्रह हजार वर्गफीट में फैला बंगला, जिसमें लैण्ड रोवर, बी.एम.डब्ल्यू., मर्सीडीज कारें तथा हर्ले डेविडसन की बाइकल्स खड़ी हुई थी। बड़ा सा हरा भरा लॉन जिसमें सुन्दर रंग–बिरंगे फूल खिले हुए थे। लॉन से लगा हुआ स्वीमिंगपूल का स्वच्छ पानी हिलोरे मार रहा था। लॉन में कुर्सियॉ लगी हुई थी, वॉचमैन ने अतिथियों को वही बैठाकर घर के अन्दर जाकर संदेश दिया।

बंगले की भव्यता देखकर कर्नल सतीश के मन में विश्वास नहीं हुआ कि क्या कोई हार्डवेयर की दुकान से इतना बड़ा बॅगला मेनटेन कर सकता है। उन्होंने संजय से पूँछा कि क्या इतना सब कुछ हार्डवेयर की दुकान से या और कुछ भी है। संजय ने कहा – दुकान से ही है।

कुछ ही देर में लड़के के परिजन और लड़का आया और विस्तार से बातें हुई। लड़के ने सीमा से बातें की और उसकी पसन्द ना पसन्द के बारे में जाना। सीमा ने भी लड़के से बहुत सारे पहलुओं पर चर्चा की। फिर शादी के बारे में सोंचकर बताने की बात हुई।

एक सप्ताह बाद संजय ने फोन पर कर्नल सतीश को सूचना दी कि लड़के वाले रिश्ते के लिए तैयार हैं। आप शादी की तैयारी करो। संजय ने दोनों पक्षों की सुविधा अनुसार उपयुक्त तिथि निकलवाकर शादी का मुर्हूत निकलवाकर शादी करवा दी।

कर्नल सतीश, संजय का आभार मानते हुए बोले यार अगर तुम मेरा मार्गदर्शन नहीं करते तो मैं ज्योतिष और सरकार नौकरी वाले लड़के के चक्कर में इतना अच्छा रिश्ता नहीं ढूँढ़ पाता।

संजय ने कहा, यार हिन्दू धर्म में ही मंगल, शनि, राहू, केतु के लेकर इतना भय पाल रखा है, दूसरे धर्मो और समाजों में इनको नही मानते तो क्या उनके यहॉ शादी विवाह नहीं होते? वार, तिथि, मुर्हूत, योग, करण आदि के चक्कर में लोग सुअवसर खो देते हैं। आज जरूरत है खुले आकाश में उड़ान भरने की न कि ज्योतिषी उलझनों में उलझकर अपने को बॉधने की।

वार और तिथि विचार के कारण कई बार हमने भी बहुत सारे जरूरी काम टाल दिये। बहुत लोग शनिवार का दिन होने के कारण लोहा नहीं खरीदते। कहते हैं लोहे में शनि का वास होता है। मान्यता के अनुसार पेट्रोल डीजल में भी शनि का वास कहा जाता है। तो फिर शनिवार के दिन पेट्रोल डीजल भी नहीं खरीदना चाहिए।

वारों (दिनों) का ग्रहों से कहीं से कहीं तक कोई सम्बन्ध नहीं। अगर दिनों के क्रम अनुसार भी देखें तो तो सोलर सिस्टम के क्रम से मेल नहीं खाते। सोलर सिस्टम में सूर्य से नजदीकी के अनुसार क्रमशः बुध, शुक्र, पृथ्वी, मंगल, बृहस्पति, शनि, अरूण, वरूण और यम ग्रह आते हैं। ये सभी ग्रह सूर्य की परिक्रमा करते हैं तथा चन्द्रमा पृथ्वी की परिक्रमा करता है। अब दिनों में पृथ्वी ग्रह को स्थान न देकर उसके उपग्रह चन्द्रमा (सोम) को स्थान दे दिया गया है। दिनों का क्रम रविवार, सोमवार, मंगलवार, बुधवार, बृहस्पतिवार, शुक्रवार, शनिवार। इनमें किसी भी दिन पर किसी भी ग्रह का कोई प्रभाव या अधिपत्य नहीं रहता किन्तु जनमानस में यह धारणा बैठ गयी है कि अमुक दिन में अमुक ग्रह प्रभावी रहता है जैसे रविवार को सूर्य, सोमवार को चन्द्रमा आदि। ग्रहों का प्रभाव अगर होता भी है तो उनकी अकाश में स्थिति के अनुरूप होता है न कि दिनों के अनुसार। इसी प्रकार चन्द्रमा का प्रभाव उसकी गति और आकाश में स्थिति के अनुसार होता है। जैसे प्रथमा, द्वितीया .... अमावस्या .... पूर्णिमा आदि। हमारी वैदिक काल गणना में तिथियों को ही मान्यता दी गयी है। वार विचार (दिनों के नामों की धारणा) तो वस्तुतः इटालियन सभ्यता से आयी हुई है।

कर्नल सतीश – यार तुम्हें तो पंडिताई करनी चाहिए। ज्योतिष और खगोल का इतना ज्ञान होने के बाद भी कभी इसका दिखावा नहीं करते।

संजय – बहुसंख्य भ्रमित पंडितों और ज्योतिषियों के सामने अपना ज्ञान सुनाना मतलब मुसीबत मोल लेना है। वे सब मिलकर हमें ही सनातन परम्परा विरोधी साबित कर देंगें और समाज में जीना मुश्किल हो जायेगा।

कर्नल शर्मा – भ्रम भय भूत सकल जग खाया अर्थात भ्रम के भूत ने सारे समाज को अपने जाल में जकड़ रखा है। समाज को सही राह दिखाने के लिए कुछ कदम तो उठाने ही होंगे।

संजय – शुरूआत अपने से ही करनी होगी। हमें भ्रामक तथ्यों से स्वयं को बचाना होगा तभी हम दूसरों को सही राह दिखा पायेंगे।

You’ve Just Finished your Free Sample

Enjoyed the preview?

Buy: https://store.prowesspub.com